NOTIFICATION NO: 594/2026
NOTIFICATION DATE: 17-02-2026

NAME OF THE SCHOLAR: MOHD FAISAL
NAME OF THE SUPERVISOR: PROF. FARAH FAROOQUI
NAME OF THE CO SUPERVISOR: PROF. TABASSUM NAQI & DR. ASJAD ANSARI
NAME OF THE DEPARTMENT: DEPARTMENT OF TEACHER TRAINING AND NON FORMAL EDUCATION (IASE)
TOPIC OF RESEARCH: A STUDY OF GENDER REPRESENTATION IN HINDI TEXTBOOKS OF NCERT AT UPPER PRIMARY AND SECONDARY LEVEL.

FINDINGS:

अध्ययन के परिणामों से हमको पता चलता है कि यद्यपि हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में ऐसे अनेक पाठ मौजूद हैं, जिनमें जेंडर से संबंधित अनेक तत्व विद्यमान हैं और जिनको सामान्य स्तर से पढ़ने पर ऐसा लगता है कि इन पाठों में लैंगिक भेदभाव पाया जाता है, लेकिन इन पाठों को सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने पर हमको ज्ञात होता है कि इनमें भेदभाव नहीं पाया जाता, बल्कि यह तो तत्कालीन समाज को युगीन परिस्थितियों एवं मान्यताओं का यथार्थ प्रतिबिंबन प्रस्तुत करते हैं।

शोध के परिणाम हमको बताते हैं कि हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में अनेक ऐसे पाठ विद्यमान हैं, जिनमें अप्रत्यक्ष रूप से जेंडर संबंधित विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन के परिणाम हमको बताते हैं कि हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में किसी भी प्रकार का कोई लैंगिक भेद नहीं पाया जाता। केवल खानपान की बदलती तस्वीर और झाँसी की रानी नामक कविता की भाषा में भेदभाव लैंगिक भेद की झलक दिखाई देती है, क्योंकि कविता में रानी लक्ष्मीबाई को मर्दानी कहकर संबोधित किया गया है, मानो वीरता और शौर्य केवल मर्दों की बपौती हो और यदि कोई महिला वीरता या साहस का कोई काम करती है तो उसको मर्दानी कहा जाता है। इसीप्रकार खानपान की बदलती तस्वीर में खाना बनाने के कार्य को

केवल महिलाओं से जोड़कर देखा जाता है, जबकि खाना तो कोई भी बना सकता है और बड़े-बड़े होटलों में जहां खाना बनाना एक व्यवसाय है, वहां तो अधिकतर पुरुष ही खाना बनाते हैं, लेकिन पाठ में इस बात पर प्रकाश डाले बिना खाना बनाने के कार्य को महिलाओं से जोड़कर देखा गया है।

इस अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस बात पर भी बल देते हैं कि पाठ्यपुस्तकों में अभ्यास प्रश्नावली को इस तरह से बनाया जाना चाहिए, जिससे कक्षा में बच्चों से आसानी के साथ जेंडर संबंधित मुद्दों पर चर्चा की जा सके।

शोध के परिणाम हमको इस बात से भी अवगत कराते हैं कि अधितर हिंदी के अध्यापकों ने साक्षात्कार के दौरान माना कि पाठ्यपुस्तकों को जेंडर भेदभाव से मुक्त होना चाहिए, जिसके लिए अनेक स्तरों पर पाठ्यपुस्तकों में सुधार की आवश्यकता है, विशेषकर अभ्यास प्रश्नों में, साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण कोर्सों को अधिक जेंडर संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है।

इस अध्ययन के परिणामों में यह भी पाया गया कि सामाजिक विज्ञान के उन पाठों को, जिनमें जेंडर से संबंधित तत्व विद्यमान है, हिंदी की पाठ्यपुस्तकों की अनेक कविता और कहानियों की सहायता से बहुत अच्छी तरह समझा-समझाया जा सकता है।

इस शोध के शैक्षिक निहितार्थों के बारे में कहा जा सकता है कि इस शोध में की सहायता से भविष्य की पाठ्यपुस्तकों को जेंडर के दृष्टिकोण से अधिक संवेदनशील बनाया जा सकता है और शिक्षकों के प्रशिक्षण में भी जेंडर के दृष्टिकोण से अनेक सकारात्मक सुधार किए जा सकते हैं। यह शोध अध्यापकों को कक्षा में ज्ञान या पाठ्यपुस्तकों को एकीकृत या संबद्ध करके पढ़ाने पर भी बल देता है, जो निश्चित रूप से अध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए लाभकारी होगा।